।। ओ३म् ।।

शैतान बने भगवान

नकली गुरुओं के गोरख धंधे।
आँखों वाले बन गए अंधे।।

लेखक
देशभक्त आर्य राहुल

मूल्य : 15 रुपये

भूमिका

"पुरुषा बहवो राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पत्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।

— *महाभारत उद्योगपर्व–विदुरनीति*

विदुर जी कहते हैं कि हे धृतराष्ट्र! इस संसार में दूसरे को निरन्तर प्रसन्न करने के लिए प्रिय बोलने वाले प्रशंसक लोग बहुत हैं परन्तु सुनने में अप्रिय विदित हो और वह कल्याण करने वाला वचन हो तो उसको कहने और सुनने वाला पुरुष दुर्लभ है क्योंकि सत्पुरुषों को योग्य है कि मुख के सामने दूसरे का दोष कहना और अपना दोष सुनना परोक्ष में दूसरे के सदा गुण कहना न कि पीछे से दोषों का व सम्मुख गुणों का प्रकाशन करना।

आज हमारे देश में हजारों ऐसे गुरु हैं जिनके करोड़ों भक्त हैं। गुरु चेलों की बाढ़ आ चुकी है परन्तु इन लालची गुरुओं को शिष्य का सही चुनाव जबकि शिष्यों को गुरु की परिभाषा तथा सही गुरु का चुनाव नहीं करना आता है।

पाखण्डी गुरु और अंधे चेले।
दोनों मिलकर अज्ञान में खेलें।

गुरुओं को शिष्यों से स्वार्थ के लिए दान–धप्पड़, सारे ऐश्वर्य, फूल–मालाएँ, मान–सम्मान, शोहरत तथा अन्य दुनिया की सारी सुख–सुविधाएँ चाहिए। अतः उस इच्छापूर्ति के लिए जितने अधिक चेले होंगे उतना अच्छा है। जबकि शिष्य यह समझते हैं कि किसी को गुरु बनाने मात्र से ही सारे पाप, क्लेश कट जायेंगे। करना–कराना कुछ नहीं बस गुरु को प्रणाम करना, कुछ पूजा–पाठ के साथ दान–दक्षिणा दे देना। दोनों स्वयं को धोखा देकर अपने–अपने दाँव–पेंच चलाते हैं। इस धोखाधड़ी में अपना आर्यावर्त महान् गुरु–शिष्यों की अनन्त वृद्धि होने पर भी पतन के मार्ग पर बढ़ रहा है। सच्चे गुरु–शिष्य ही भारत माता को पतन से बचा सकते हैं।

अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शक, जो वेद–शास्त्रों का उपदेश करे, सही आचार–वियार की शिक्षा देने वाला तथा वेदाध्ययन करवाने वाला आचार्य ही यथार्थतः गुरु है। आजकल ऐसा वेदों का विद्वान्, अखंड ब्रह्मचारी, देशभक्त गुरु मिलना अत्यंत कठिन है। अतः आप स्वाध्याय पूर्वक सभी आर्ष ग्रन्थों (वेद, उपनिषद, गीता, मनुस्मृति) को पढ़कर अपने आचरण में उनके ज्ञान को उतारकर कोई भी व्यक्ति पैसों के चक्कर में गलत–सलत, आधी–अधूरी गीता, मनुस्मृति, वेद आधी छाप देते हैं। अतः ऐसे अनार्ष ग्रन्थों से बचें। महर्षि दयानन्द जी के बाद हरयाणा के आचार्य बलदेव तथा उनके शिष्य स्वामी रामदेव जी सच्चे गुरु की परिभाषा पर खरे उतरते हैं। हालांकि प्रयत्नपूर्वक ढूंढ़ने पर कुछ सच्चे गुरु मिल सकते हैं। वैसे तो सच्चे गुरु तथा परमपिता परमात्मा को बड़े–बड़े विद्वान संन्यासी भी परिभाषित नहीं कर पाये तो मेरे जैसा अल्पसामर्थ्य वाला उन्हें परिभाषित कैसे कर सकता है। परन्तु पुस्तक पाखण्डियों को भली–भांति परिभाषित करती है। झूठ को सच से पृथक करने वाली विवेक बुद्धि को ही ज्ञान का नाम दिया है। अतः ज्ञानपूर्वक सही–गलत विचारकर समाज को भी सत्य–सत्य बता देवें। पुस्तक अत्यन्त सरल तथा आम बोल–चाल की भाषा में है जिससे सभी सज्जन पुस्तक के उद्देश्य को आसानी से समझकर इस उद्देश्यपूर्ति के लिए खुद भी तन, मन, धन से सहयोग कर सके।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सब सत्यप्रिय सज्जनों को पुस्तक पसंद आयेगी क्योंकि ज्ञान के साथ–साथ रोचक बातों से परिपूर्ण पुस्तक रुचिकर होती है। इतना याद रखें कि चित्र नहीं चरित्र की पूजा करो, व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व की पूजा करो।

अपूज्या तत्र पूज्यन्ते पूज्यानां च विमानना।
त्रीणी तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्ष मरणं भयम्।।

अर्थात् सज्जनों, सत्पुरुषों एवं राष्ट्रभक्तो का देश में सार्वजनिक रूप से सम्मान होना चाहिए और दुष्ट व देशद्रोहियों का भीड़ भरे चौराहों एवं सार्वजनिक स्थलों पर अपमान होना चाहिए। तभी समाज में श्रेष्ठ लोगों की वृद्धि एवं भ्रष्ट लोगों का अन्त होता है। याद रहे साँच को आँच नहीं।

शैतान बने भगवान

गीता में भगवान् श्रीकृष्ण जी ने वेदानुकुल आचरण को धर्म तथा वेद विरूद्ध आचरण को अधर्म बतायाह" और वेद भगवान् कहते हैं –

सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुः ।। ऋ. 4.33.6

अर्थात् नरों (मर्दों) ने सत्य का ही प्रतिपादन किया है और वैसा ही आचरण किया है। साथ ही वेद तथा गीता राष्ट्रधर्म को परम धर्म तथा राष्ट्र के लिए प्राणदान देने वाले को परमगति मिलना बताते हैं। अतः भगवान श्रीकृष्ण के वचनों का पालन करते हुए वेदों को आधार मानकर सत्यासत्य का प्रतिपादन करने के लिए यह पुस्तक सभी सज्जनों के चरणों में अर्पित करता हूँ।

पुस्तक लिखने की प्रेरणा– साईं की सच्चाई बहुत कम लोग जानते हैं अतः साईं के ढोल की पोल खोलने तथा समाज व देश को सत्य का दर्पण दिखाने के लिए एक ऐसी पुस्तक की सख्त आवश्यकता थी क्योंकि आजतक नकली गुरुओं तथा भगवानों के प्रेरणा स्त्रोत साईं के ऊपर कोई सत्य पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। यहाँ एक सच्चा तथ्य ध्यान देने योग्य है कि सन् 2008–09 में 20,000 लोग शिरड़ी हर रोज आते–जाते थे जबकि अब चार साल बाद यह आंकड़ा 60,000 व्यक्तियों का हो गया है। इसका कारण सीधा सा है कि 'आँख के अंधे गाठ के पूरे' लोग एक के पीछे दूसरा भेड़ चाल का शिकार हो रहे हैं। अब यही आंकड़ा 2008–09 के बजाय 2005–06 का निकाले तो लोगों की संख्या गिनी–चुनी रह जाती है। आज से 7–8 वर्ष पहले साईं का प्रभाव न्यून था। हम सब जानते हैं 'चढ़ते सूरज को सब सलाम करते हैं' ऐसा ही कुछ साईं के साथ भी हुआ। कुछ मक्कारी लोग कमाई के चक्कर में जगह–जगह मंदिर खोलकर इन धर्मों को शीघ्र ही पनपा देते हैं।

अतः श्रेष्ठजन बिना समय व्यर्थ किये 'हैवान बना भगवान्' नाम से सभी छोटे–मोटे धूर्तों का सच समाज को बता देवे।

श्रेष्ठजन ही खोलते हैं ढोंगियों की पोल।
समाज के लिए देते हैं नये दरवाजे खोल।।

सामाजिक गृहस्थ लोगों के पास विभिन्न विषयों पर शोध करने का समय नहीं होता परन्तु देश व समाज के लिए जीने वाले श्रेष्ठजन पुस्तकों के माधयम से समाज को सत्य से अवगत करावें। आज उपलब्ध साहित्य में से 1–2 पुस्तकें ही सत्य प्रतिपादित करती हैं बाकी पुरस्कार प्राप्ति के लिए लिखी जाती हैं जिनका आम जनता से कोई सरोकार नहीं होता है। धियो यो नः प्रचोदयात्।। यजु. 3.6.3 अर्थात् सर्वव्यापक परमपिता परमात्मा हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करें।

पाखण्डी गुरुओं का मायाजल

'रोटी खाइये शक्कर से दुनिया ठगिये मक्कर से अर्थात् संसार में सीधे–साधे वेदज्ञानी महात्माओं को कोई कुछ नहीं देता और न पूछता है। जो कुछ ढोंगबाजी और धूर्तता करता है वही पदार्थ पाता है। भारत के सच्चे राष्ट्रपिता महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इन पाखण्डियों के बारे में कहते हैं कि इनके जीते–जी इनके सम्प्रदायों में बहुत से शिष्य या अनुयायी नहीं होते हैं। क्योंकि अविद्वानों में यह चलन है कि मरे पीछे उनको सिद्ध बना लेते हैं, पश्चात् बहुत सा माहात्म्य करके ईश्वर के समान मान लेते हैं।

यदि आज हम किसी बुद्धिमान व्यक्ति से पूछे कि सबसे अच्छा व फायदेमंद कारोबार किसका है तो जवाब मिलेगा नकली गुरुओं व पाखण्डी भगवानों के चेलों का है। इस बात को साबित करने के लिए साईं के ट्रस्ट का उदाहरण दिया जा सकता है। पिछले एक साल में शिरड़ी मंदिर ने करीब 400 करोड़ (तिरुपति बाला जी के बाद दूसरा स्थान) की आमदनी प्राप्त की है जबकि यह ट्रस्ट खर्च करने में फिसड्डी है। शिरडी मंदिर ट्रस्ट तर्क देता है कि वह पैसा तो खर्च करना चाहता है लेकिन सरकारी उदासीनता तथा बाधाओं के कारण राष्ट्र की सेवा नहीं कर रहा है। सारी दुनिया में भारतीय संस्कृति का झंडा गाड़ने वाले पतंजलि ट्रस्ट के पास शिरड़ी ट्रस्ट

से आधा पैसा भी नहीं है।

उत्तर भारत में एक कहावत है –

कमावे धोती आला अर खावै टोपी आला।

अर्थात् खून पसीने से पैसा देश की गरीब तथा आम जनता कमाती है और मक्कारी तथा पाखण्डी लोग बहला–फुसलाकर, धोखे या तरह–तरह का भय दिखाकर जनता की गाढ़ी कमाई ठग लेते हैं। कहावत में टोपी आले से अभिप्राय सिर्फ राजनीतिक व्यक्तियों से ही नहीं बल्कि नकली गुरु तथा पाखण्डी भगवानों से भी है। हमारे देश की भोली–भाली जनता पर एक फिल्मी गाना सही बैठता है कि 'सब कुछ सीखा हमने ना सीखी होशियारी।' लोग इस हद तक इन नकली गुरुओं के बिछाए जाल में फंस चुके हैं कि 'कोई जीवों या मरों पोप जी का पेट पूरा भरो।' चाहे सारा परिवार भूखा मर जाए लेकिन पाखण्डियों को दान–दक्षिणा जरूर देंगे। मैं यहाँ दान–दक्षिणा देना गलत नहीं मानता बल्कि दान देने से तो मोक्ष प्राप्ति का साधन है।

वेद भगवान् तथा गीता में श्रीकृष्ण भगवान कहते हैं कि धूर्त व पाखण्डी को दान देने वाले का नाश इसी जन्म में तथा लेने वाले का परजन्म में नाश होता है। महर्षि दयानन्द जी ने भी यही माना है। अतः दान तो करें क्योंकि इसके बिना मोक्ष नहीं मिलता लेकिन वेदों के विद्वान् राष्ट्र व समाज के लिए जीने–मरने वाले सच्चे ब्रह्मचारी संन्यासी को सामर्थ्य अनुसार दान करें। सच्चे राष्ट्रपिता महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि –

गुरु लोभी चेला लालची दोनों खेले दाँव।
भवसागर में डूबते बैठ पत्थर की नाव।।

यहाँ लोभी का अर्थ धन व प्रतिष्ठा से तथा लालची का अर्थ पाप कर्मों की क्षमा व मुक्ति प्राप्ति से है। ऐसे गुरु भोले–भाले लोगों में गुरु बिना मुक्ति नहीं' की धारणा फैलाकर खूब धन कमाते हैं। थोड़े से लोगों को जादूगरों व विज्ञान के बल पर छोटे–मोटे

चमत्कार दिखाकर अपने जाल में फंसा लेते हैं। उसके बाद 'आँख के अंधे गाठ के पूरे' दूसरों की देखा–देखी इनके चंगुल में फंसते चले जाते हैं।

ये नकली तथा पाखण्डी गुरु थोड़े से लोगों को घेरकर उनकी आड़ में सारे गैर–कानूनी काम करके देश को खोखला कर रहे हैं। बुद्धिमान पुरुष जानते हैं कि राष्ट्र व दूसरों के लिए जीने वाला व्यक्ति ही अमरत्व (मुक्ति) प्राप्त करता है। आज हमारे देश में हजारों, लाखों पाखण्डी गुरु हैं लेकिन राष्ट्र की कोई समस्या हल होनी तो दूर बढ़ती ही जा रही है। इन्हीं गुरुओं को मृत्यु के बाद हम भगवान् बना देते हैं।

एक दूसरा कारण भी है जो इन धर्मों को पनपाता है वह है भगवान् का भय। समाज दुविधा में है कि कौन सा धर्म सही है व कौन सा गलत है। मृत्यु के बाद कहीं दूसरे धर्म का भगवान हमारी दुर्गति न कर दे। इसी भय अज्ञानता को मिटाने के लिए सत्य सनातन वैदिक धर्म जो भगवान् राम, योगीराज श्रीकृष्ण का धर्म इस आर्यावर्त का धर्म है, को अपनाना होगा।

मैं एक घटना द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से गुरुओं के मायाजाल को प्रस्तुत करने से पहले बताना चाहूँगा कि जो व्यक्ति एक बार किसी पाखण्डी गुरु के चक्कर में पड़ जाता है वह मुक्ति प्राप्ति के सारे साधनों से दूर हो जाता है। एक व्यक्ति अपनी पत्नी तथा लड़कों के साथ बड़े सुख से रहा करता। भारतीय औरतें धार्मिक होती हैं, अतः ज्ञान के अभाव में किसी के भी बहकावे में आकर किसी पाखण्डी गुरु (भगवान) के चंगुल में फंस जाती हैं। उस व्यक्ति की पत्नी भी एक गुरु के चंगुल में फंस गई। एक दिन वह व्यक्ति अपने बच्चों से कहता है कि मैं हर रोज तुम्हारे लिए फल–मेवे लाता हूँ तुम तगड़े क्यों नहीं होते तो बच्चे पिता जी से कहते हैं कि आप झूठ बोल रहे हो। वह बात को मजाक में टालकर कल लाने का वादा करता है। अगले दिन काम पर जाने का बहाना बनाकर छुपकर

पत्नी को कहीं जाता हुआ देखता है। पीछा करने पर देखा कि वह एक आश्रम में गई और एक पाखण्डी के चरणों में सिर रखे हुए थी। उसने वहीं अपनी पत्नी को दण्ड दिया। इस घटना से मैं विद्वान माताओं बहनों पर कटाक्ष करने की चेष्टा नहीं कर रहा बल्कि बहुत से भाई व बुजुर्ग भी ऐसे धूर्त पाखण्डियों के चक्कर में फंसे हुए हैं।

होता नहीं जो किसी जीव पर थोड़ा भी दयालु।
कलयुग में ऐसे पापी को पूजते हैं श्रद्धालु।।

आज हमारे देश के 70 प्रतिशत गरीब तथा बुद्धिहीन लोग तांत्रिक, सेवड़ों, स्याणों आदि के चक्कर में पड़कर बर्बाद हो रहे हैं। यदि ये तांत्रिक भूत–प्रेत को वश में करके कुछ भी कर सकते हों तो ये टाटा–बिरला से भी ज्यादा अमीर व प्रधानमंत्री से भी ज्यादा ताकतवर हो जाएं। जबकि ऐसा नहीं होता। ये तांत्रिक पदार्थ विद्या (रसायन शास्त्र) की पढ़ाई करके लोगों को भ्रमित करते हैं।

विज्ञान के बल पर जो करते हैं चमत्कार।
अविद्वान ही करते हैं इन सबको नमस्कार।।

विश्व के सभी देशों व प्रमुख संस्थाओं ने मान लिया है कि हमें मनुष्य शरीर के केवल 5 प्रतिशत रहस्यों का ही पता है। कुछ रसायन तो ऐसे भी होते हैं कि जो एकबार शरीर के सम्पर्क में आ जाए तो शरीर के सारे केमिकल्स व हार्मोन्स को अस्त–व्यस्त कर देते हैं। उसके बाद हम भूत–प्रेत की कल्पना कर लेते हैं। जो लोग अस्वस्थ होते हैं व डरपोक होते हैं उन्हें ही ऐसी काल्पनिक बातें साक्षात् होती हैं। हमारे पूर्वजों ने भी कहा है कि 'भय का भूत'। यहाँ ये पूर्णतः मानने वाली बात है कि जो व्यक्ति एक बार तांत्रिक के चक्कर में पड़ गया उसे सारी उम्र दुःखों का, भूत–प्रेतों, अस्वस्थता का अनुभव होगा। कोई भी व्यक्ति रसायन शास्त्र की पढ़ाई करके तथा दिल्ली में बड़ी–बड़ी केमिस्टों व विज्ञान–प्रोजेक्ट की दुकानों से अपनी जरूरत के केमिकल्स आदि लाकर धंधा कर सकता है। अतः आप सब इन संक्षेप में बताई बातों पर अमल करके दूसरों को

भी बताएं तथा समाज में जहाँ भी ऐसे ढोंगी हो उनको समझाकर या उचित दण्ड देकर सुधार दें।

ओ३म् सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।।

महाभारत के श्रीकृष्ण बनाम पुराणों के श्रीकृष्ण महान आर्यभट्ट के अनुसार महाभारत का युद्ध 3137 ई. पू. हुआ। ताजा शोधानुसार ब्रिटेन व अन्य देशों के कई शोधवेत्ताओं ने महाभारत में वर्णित 150. खगोलीय घटनाओं के संदर्भ में कहा है कि महाभारत का युद्ध 22 नवम्बर, 3067 ई. पू. हुआ। उस समय कृष्ण 55–56 वर्ष के थे।

यहाँ पर हम सबको लगभग एक हजार वर्ष पहले सम्पूर्ण खगोल विद्या का ज्ञान देने वाले आर्यभट्ट की बात मानने योग्य है क्योंकि हजारों साल पहले आर्यभट्ट ने पृथ्वी व सूर्य की जो दूरी निकाली थी आजकल के वैज्ञानिक उसमें थोड़ा–सा भी फेरबदल नहीं कर पाए।

भारत के सच्चे राष्ट्रपिता महर्षि दयानन्द जी ने श्रीकृष्ण के बारे में बताया कि श्रीकृष्ण जी का गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मृत्युपर्यन्त कुछ भी बुरा काम नहीं किया। स्वामी जी श्रीकृष्ण को विद्वान, सदाचारी, कुशल राजनीतिज्ञ एवं सर्वथा निष्कलंक मानते हैं।

सभी हिन्दू भगवान् श्रीकृष्ण को कृष्ण जन्माष्टमी पर बड़ा याद करते हैं। कुछ उन्हें पवित्र गीता के ज्ञान के लिए तो कुछ उन्हें कंस तथा कौरवों के नाश के लिए याद करते हैं।

इस्लाम को मानने वाले जो बहुपत्नीवाद में विश्वास करते हैं श्रीकृष्ण पर 16000 रानी रखने का आरोप लगाकर माखौल उड़ाते हैं। उनके इस अपमान का कारण भागवतादि पुराण है। इन भागवत वालों ने अनुचित दोष लगाकार दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा से संभोग, गोपियों व परस्त्रियों से रासमण्डल क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाए तथा रण छोड़ आदि भी कहकर

उनका खूब अपमान किया है। जिससे अन्य मत वाले महान् राजा भगवान् श्रीकृष्ण जी की निन्दा करते हुए प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि – विष्णु पुराण अंश 4 अध्याय 13 श्लोक 4960 में लिखा है कि गोपियाँ अपने पति, पिता व भाईयों के रोकने पर भी नहीं रूकती। रोज रात्रि को वे कृष्ण के साथ संभोग करती थी। कृष्ण भी उनके साथ रमण करते थे। पुराणों के लेखकों ने श्रीकृष्ण को कलंकित करने की कोई कसर नहीं छोड़ी। भागवत पुराण स्कंद 10 अध्याय 33 श्लोक, 17 में भी ऐसा ही लिखा गया है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के कृष्ण जन्म खण्ड अध्याय 1 में इससे भी ज्यादा अभद्र शब्द प्रयोग किए गए हैं। पदम् पुराण उत्तर खण्ड अध्याय 245 में भी ऐसा ही लिखा है। बन्दे मातरम् के रचयिता श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी जी ने 36 वर्ष महाभारत पर शोध कर कहा है कि श्री कृष्ण जी की एक पत्नी थी। विवाह के पश्चात् श्रीकृष्ण जी पत्नी रूकमणि के साथ बदरिक आश्रम चले गए जहाँ 12 साल ब्रह्मचर्य से तप के पश्चात् उनका एक पुत्रा प्रदुमन पैदा हुआ। महाभारत के श्रीकृष्ण जैसा अलौकिक पुरुष जिसने कभी कोई पाप नहीं किया, कभी–कभी पैदा होता है। दयानन्द जो सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि पाण्डवों द्वारा जब राजसूय यज्ञ किया गया तो श्रीकृष्ण को यज्ञ का सर्वप्रथम अर्घ प्रदान करने के लिए सबसे उत्तम समझा गया जबकि वहाँ अनेक विद्वान ऋषि–मुनि उपस्थित थे। श्रीकृष्ण जी की श्रेष्ठता समझें कि उन्होंने सभी आगुंतकों के धूल भरे पैर धोने का कार्यभार संभाला। श्रीकृष्ण जी महाराज को सबसे बड़ा कूटनीतिज्ञ कहा गया क्योंकि उन्होंने बिना हथियार उठाए कौरवों का नाश कर दिया। अतः वेदों का प्रचार तथा पुराणों आदि झूठे ग्रंथों का बहिष्कार करो।

आजकल माता–पिता अपने बच्चों को कहते हैं कि बेटा क्यों लड़–झगड़ रहे हो क्या महाभारत मचा रखा है। बच्चे जब ज्यादा बोलते हैं तो कहते हैं क्या रामायण बक रहा है तथा बहुत से तो कहते हैं कि उसकी हिन्दी कर दी। अब रामायण, महाभारत हिन्दी

अपमानसूचक शब्द बना दिये गये हैं। यह आर्यवर्त निवासियों के लिए शर्म की बात है। इसके विपरीत अपमानसूचक शब्दों को हम सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। पिता को पापा (पापात्मा), माँ को ममी (मरा हुआ शरीर), बच्चों के टिंकू (आवारा लड़का), पत्नी को मिसीज (पत्नी को छोड़कर बाकी सभी)।

अब यह आप सभी को सोचना होगा कि इस अंधकारमय माहौल में रहना है या माहौल बदलकर अपना व अपने देश का हित करना है। कुछ लोग तो महाभारत व रामायण को कपोलकल्पित मानते हैं तो उनको बता दें भारत के ही नहीं यूरोप के सभी प्रमुख शोध संस्थानों ने भी महाभारत तथा रामायण के सच होने की पुष्टि की है। आज से लगभग 5200 साल पहले हुई महाभारत के काल से जुड़े कई अवशेष दिल्ली के पुराना किला से मिले हैं। इस किले को पाण्डवों का किला भी कहते हैं। कुरुक्षेत्र में भी भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा महाभारत काल के बाण तथा भाले बड़ी संख्या में मिले हैं। इसके अतिरिक्त गुजरात के पश्चिमी तट पर समुद्र में डूबे 7000–3500 वर्ष पुराने शहर खोज लिए गए है जिसमें पूरी द्वारिका को खोज लिया गया है। इसके अलावा बरनावा (मेरठ, बागपत रोड) में भीलाक्षागृह के अवशेष मिले हैं। एक टीला तथा वह सुरंग जिससे पांडव बचकर निकले ये आज भी वहां मौजूद है। पिछले 10 सालों में आये भूकंप तथा सुनामी में हमने बीस मंजिला इमारतों को भी भूमिगत होते देखा है तो आज से कई लाख साल (लगभग 17.50 लाख साल पहले) की रामायण के काल के नगर आदि ऐसी प्राकृतिक आपदाओं से सैकड़ों मील नीचे चले गये होंगे। क्योंकि रामसेतु आज भी लगभग 30 मील समुद्र के नीचे मौजूद है। इण्टरनेट पर जाकर कोई भी व्यक्ति उस अद्भुत रचना के चित्र देख सकता है। वह सेतु मानवनिर्मित है ऐसा सभी ने माना है क्योंकि पत्थरों को चूने तथा लोहे की किलों से जोड़ा गया है। कार्बन–डेटिंग से पता चलता है कि यह पुल 17.50 लाख साल

पुराना है तो कुछ इसे 5.50 लाख साल का मानते हैं। इन सब बातों से सिद्ध है कि यह आर्यावर्त भूमि हमेशा से महान पुण्य भूमि है जिसमें ऐसे महापुरुषों ने जन्म लिया। ऐसे महान देश के लिए एक ही बात कही जा सकती है कि कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौर जमां हमारा। परन्तु आज इन मंदिरों तथा पुजारियों ने ऐसे महापुरुषों के नाम पर भीख लेकर उनको भिखारी बना दिया है। ये पाखण्डी मानते हैं कि 'मीठा–मीठा गड़प्प और कड़वा–कड़वा थू'। अतः वेद भगवान्, गीता, मनु महाराज तथा राष्ट्रपिता स्वामी दयानन्द की इस बात को ही सत्य जानें कि सर्वव्यापक, अजन्मे परमात्मा को छोड़ किसी अन्य शरीरधारी को तू ईश्वर की उपाधि न दे।

ऐसे महान् राष्ट्र में जन्म लेकर भी यदि कोई इस देश से भय, भूख, भ्रष्टाचार तथा पाखण्ड दूर करने का प्रयास तक न कर सके तो उसके लिए दो सुन्दर पंक्तियां कही जा सकती हैं कि –

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नहीं पत्थर है वह जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

समाज में कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो स्वयं तो कुछ करते नहीं और जो दूसरे लोग देश व समाज के लिए कुछ करना चाहें तो उन्हें पागल कहकर मजाक उड़ाते हैं। ऐसे राष्ट्रभक्त भाई–बहन इन सब बातों का एक ही जवाब दें कि–

सीने पर जो घाव है, सब फूलों के गुच्छे हैं।
हमें पागल ही रहने दो, हम पागल ही अच्छे हैं।।

– राष्ट्रभक्त आर्य राम प्रसाद बिस्मिल

साईंमत समीक्षा

15 अक्टूबर, 1918 ई. को मरने वाले साईं का जन्म सन् 1838 के करीब साईं सच्चरित्र में बताया गया हैं पिछले 4–5 सालों से साईंमत बहुत तेजी से फैला क्योंकि हमारे देश के लोग भोले होते हैं बड़ी जल्दी विश्वास कर लेते हैं। अतः इस साईं मत के विषय में सत्यासत्य जानना सभी के लिए अत्यावश्यक है क्योंकि हमारे सभी आर्ष ग्रन्थों (वेद, उपनिषद्, गीता) में कहा गया है कि गुणहीन पाखण्डी गुरु को वैसे ही त्याग दो जैसे सृष्टि के सभी जीव मल–मूत्रादि को त्यागकर सुख का अनुभव करते हैं। सभी राष्ट्रभक्त भाई–बहनों से विनम्र प्रार्थना है कि आप कुछ जाने नहीं दूसरें की माने नहीं, वाली मानसिकता छोड़कर पक्षपात रहित होकर साईं के विषय में विचार करें। पुस्तक में दिए प्रमाणो को साईं भक्त झुठला नहीं सकते हैं क्योंकि ये प्रमाण साईं की सच्चरित्र से लिए गए हैं। आज हम साईं की जाने–अनजाने में अज्ञानवश पूजकर अपने सनातन धर्म की जड़ें खोद रहे हैं। जिस प्रकार रामायण तथा महाभारत श्रीराम तथा श्रीकृष्ण जी के उज्जवल चरित्र को उत्कर्षित करते हैं उसी प्रकार साईं के जीवन चरित्र की एकमात्र उपलब्ध प्रमाणिक पुस्तक 'साईं सच्चरित्र' है क्योंकि साईं ने स्वयं पुस्तक लेखन में सहयोग तथा मार्गदर्शन किया है। इस 'साईं सच्चरित्र' में साईं के चरित्र का जो अनुदर्शन होता है उसकी एक झलक प्रस्तुत है –

(क) साईं माँसाहारी था। साईं अपने हाथ से बकरा काटता तथा माँसमिश्रित पुलाव बनाता था।

(ख) साईं बिना कारण कभी भी क्रोधित होकर लड़ाई–झगड़ा करता तथा अपशब्द कहता था।

(ग) साईं कहता है कि मैं एक मुस्लिम फकीर मुझे गंगाजल से क्या लेना। साईं ने न स्वयं उपवास किया और न दूसरों को उपवास करने दिया।

(ध) साईं अपनी स्व–प्रशंसा करता रहता था। अपने को सर्वशक्तिमान, त्रिकालदर्शी भगवान् कहकर पुजवाने के लिए मोक्ष व सुखदेने का लालच देता था।

(ङ) साईं नशा करता था। हर समय बीड़ी, तम्बाकू चिलम पीता था। नृतकियों का नृत्य देखना भी उसका शौक था।

(च) साईं अपने को मुस्लिम फकीर कहता तथा मस्जिद में 60 वर्ष रहकर सदैव 'अल्लाह मलिक' कहता रहा। खाने से पहले फतीहा, नियमित कुरान पढ़ना तथा सिर से पाँव तक मुस्लिम परिधान पहनना उनका नियम था। मुसलमानों की तरह उन्हें दफनाया गया तथा उर्दू में कब्र पर तारीख लिखी गई। इतना सब होते हुए भी मुस्लिमों ने ऐसे व्यसनी तथा पाखण्डी को कभी नहीं अपनाया क्योंकि ऐसे लोगों का ना कोई धर्म होता है न मजहब, न कोई राष्ट्र होता है।

थोड़ा सा विचार करने पर यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि साईं हिन्दू–मुस्लिम एकता का ढोंग क्यों करता था। यदि साईं किसी एक धर्म का साधु, संत या फकीर बनता तो उसका पृथक मत नहीं चलता जिससे वह भगवान् या अल्लाह या सबका कर्ता–धर्ता कभी न बनता। अतः साईं 'धोबी का कुत्ता घर का ना घाट का' नहीं बनना चाहता था। साईं अपने मकसद में अपने जीते जी तो सफल न हुआ लेकिन मरने के बाद कुछ स्वार्थियों ने अपनी कमाई के लिए साईं को महिमामंडित करके भगवान् घोषित कर दिया। बाद में उसका कपोलकल्पित महात्म्य गढ़ कर उसको परमात्मा बना दिया गया जिसमें कुछ भोले हिन्दू तथा बहुत थोड़े मुस्लिमों ने विश्वास कर लिया। बाद में धीरे–धीरे समाज 'भेड़ चाल' का शिकार होकर बड़ी संख्या में साईं का भक्त बन गया।

अब आगे विस्तार से साईंमत समीक्षा होगी। साईं सच्चरित्र आदि से ली बातों पर में कुछ गम्भीर प्रश्नों को खड़े करके सत्य–असत्य आपको खोजने का पुण्य अवसर दूँगा जो बात बुद्धि से सिद्ध हो उसी को सत्य जानें। जो व्यक्ति सत्य जानने के लिए

सदा प्रयत्नशील रहता है उसी के हृदय में ज्ञान की ज्योति प्रकट होती है।

मेरे मरने के बाद मैं ही नहीं मेरी कब्र भी बात करेगी। मुझ पर विश्वास रखोगे तो तुम्हें अधिक लाभ होगा। – साईं

साईं समीक्षा – जो लोग विद्वान तथा सत्संगी होकर विचार नहीं करते वे सदा भ्रमजाल में रहकर ऐसी असम्भव तथा तर्कहीन बातों पर विश्वास करते हैं। यदि साईं की कब्र बात करती है तो सुनाई क्यों नहीं देती? साईं की कब्र इस राष्ट्र की कोई समस्या हल क्यों नहीं करती है। जो जीते जी इस देश की समस्याएँ हल करने का प्रयास तक न कर सका वह भला मरकर किसका भला कर सकता है। क्या दुनिया में जो साईं पर विश्वास नहीं करते वे सुखी तथा जो विश्वास करते हैं वे दुखी नहीं हैं। हमें सुख–दुःख तथा लाभ–हानि इस जन्म तथा पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार मिलते हैं। जो कोई तुम्हारे दुःख दूर करने को कहे तो समझ लो वह मूर्ख तथा अज्ञानी स्वयं तो डूबेगा तुम्हें भी डूबा देगा।

साईं सच्चरित्र पृष्ठ–10 – अभी तक शांत बाबा अचानक क्रोधित होकर स्त्रियों को अपशब्द कहने लगे।

समीक्षा – साईं छोटी–सी बात पर माता–बहन तुल्य स्त्रियों को अपशब्द कहता है। उस साईं को जन्म देने वाली माँ भी एक स्त्री है। हमारे सभी आर्ष ग्रन्थों में मातृ शक्ति का सम्मान तथा गुणगान हुआ है।

इसी पृष्ठ पर साईं बिना दवाई हैज़ा ठीक करने की बात करता है। यदि ऐसा है तो उनकी कब्र बिना दवाई रोगों को ठीक करने का उपाय क्यों नहीं बताती है। हमारे शास्त्रों में ऐसे मनुष्यों के बारे में लिखा है कि जो मनुष्य समाज व राष्ट्र की भलाई के ज्ञान, विज्ञान तथा रहस्यों को सभी के कल्याण के लिए सार्वजनिक नहीं करता वह दुःख पाता हुआ नष्ट हो जाता है। पुस्तक में आगे उसे वैद्य बताया गया है। पहले बिना दवा और अब दवा से छोटे–मोटे रो

ठीक करता दर्शाया है। यदि वह वैद्य था तो रोगों की चिकित्सा के लिए कोई पुस्तक, ग्रन्थ क्यों नहीं लिखा जिससे मानवता का भला होता। जो व्यक्ति अपना सर्दी–जुकाम तथा खाँसी ठीक न कर सका वह दूसरे के रोग क्या मिटायेगा।

सच्चरित्र पृष्ठ–14 – मैं स्वयं ही अपनी जीवनी (सच्चरित्र) लिखकर भक्तों की इच्छा पूर्ण करूँगा। मेरे चरित्र तथा उपदेशों को सुनने मात्र से परमानन्द की प्राप्ति हो जायेगी।

समीक्षा – जीवनी हमेशा इंसान की लिखी जाती है भगवान की नहीं। जो सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा इस ब्रह्माण्ड के कण–कण में बसा है क्या वह एक छोटे से गर्भ में आ सकता है। अतः परमात्मा अजन्मा है। जो बिना जन्म लिए इस अनन्त सृष्टि को रचता है तो क्या वह बिना जन्म लिए पापियों का नाश नहीं कर सकता है। दुष्टों के नाश हेतु महापुरुष जन्म लेते हैं। जो कोई राक्षसी तथा दुष्ट प्रवृत्ति के मनुष्य भी साईं सच्चरित्र तथा उपदेशों को सुनेंगे तो भी साईं उन्हें परमानन्द देने की बात कहता है। अतः साईं दयालु न रहा तथा पक्षपाती भी सिद्ध हुआ। बुरे कर्मों की सजा द्वारा ही किसी को सुधारा जा सकता है। माफ़ करने से वह महापापी होकर पतन की ओर जायेगा। आप सभी ने घड़े तथा कुम्हार का उदाहरण तो सुना ही होगा।

पृष्ठ 16 पर साईं हेमाद्रियंत को हेमाद्रिपंत कहकर अपनी अल्पसत्ता दर्शाते हैं।

साईं सच्चरित्र पृष्ठ–18

साईं कहता है कि सच्चरित्र लिखने के लिए मेरी पूर्ण अनुमति है। मेरी लीलाएँ लिखी तो अज्ञान का नाश होकर ज्ञानरूपी रत्न प्राप्त होगा। जो मेरा नाम स्मरण करेगा मैं उसकी समस्त इच्छाएँ पूर्ण करूँगा। जो मेरा पूजन, स्मरण कर मेरी शरण में आता है उसको मैं मुक्ति प्रदान कर देता हूँ। मेरी कथाएँ सुनने मात्र से ही मुक्ति प्राप्त हो जायेगी। केवल साईं–साईं के उच्चारण से ही समस्त पाप नष्ट होंगे।

समीक्षा – इन पंक्तियों में साईं स्वयं को श्रीकृष्ण दर्शाना चाहता है परन्तु साईं पूरी उम्र गीता के विरूद्ध आचरण करता रहा। किसी का नाम स्मरण व पूजन से मुक्ति तो क्या एक छोटी–सी बिमारी तक ठीक नहीं होती है। दूसरों के लिए जीने वाला, राष्ट्र के लिए मरने वाला, माता–पिता की सेवा करने वाला, यज्ञ व सच्चे परमात्मा की स्तुति करके पल–पल शुभ कर्म करने वाला ही मुक्ति प्राप्त कर सकता है। साईं–साईं उच्चारण से यदि पाप नष्ट होते हो तो साईं भक्त इस राष्ट्र का भ्रष्टाचार तथा गरीबी नष्ट क्यों नहीं कराते हैं।

वेद मुक्ति मार्ग के साधन हैं।
पाखण्डी मुक्ति मार्ग की अड़चन हैं।।

सच्चरित्र पृष्ठ संख्या–21 – एक लंबा–तगड़ा व्यक्ति रात्रि को आठों प्रहर ऊँची व कर्कश आवाज में 'अल्लाह हो अकबर' के नारे लगाता। शिरड़ी में लोग दिनभर खेत में काम करके थके आते तो यह रात्रि में सोने नहीं देता। लोगों ने साईं से शिकायत की तो साईं ने लोगों के आड़े–हाथों लिया व कहा कि अपने काम से काम रखो। साईं कहता है कि इसकी पत्नी बुरे स्वभाव की है। वह इसे तथा मुझे कष्ट देती है। वास्तव में उसकी कोई पत्नी न थी। साईं का संकेत बुरे विचारों की ओर था। उसका पक्ष लेकर साईं ने सभी जीवों पर अपना समान प्रेम दर्शाया था।

समीक्षा – उस व्यक्ति की पत्नी न थी। इससे साईं की मक्कारी तथा झूठ का पता चलता है। यदि पत्नी का मतलब बुरे विचारों से था तो बुरे विचार साईं को भी कष्ट देते थे। यह बात सही भी लगती है क्योंकि साईं के विचार व आचरण पुस्तक में नीच कोटि के प्रतीत होते हैं। वह पक्षपाती था वरना सभी पर प्रेम होता तो सारे गाँव वालों की बजाय उस एक व्यक्ति को धमकाता।

सच्चरित्र पृष्ठ–24 – साईं निर्भय होकर संभाषण करते, नृर्तकियों का अभिनय तथा नृत्य देखते तथा अल्लाह का नाम सदा

उनके होठों पर रहता था। जब दुनिया जागती तब वे सोते तथा जब दुनिया सोती तो वे जागते थे। वे सर्दव 'अल्लाह मालिक' पुकारते थे।

समीक्षा – यहाँ इतना कहना ही उचित होगा कि हमारे देश के अविद्वान ऐसे दुराग्रही मक्कारियों को भगवान् बना देते हैं। उल्लू तथा चोर जैसी दिनचर्या थी उसकी।

सच्चरित्र पृष्ठ–28 – बाबा के श्रीचरणों से गंगा–यमुना की धारा बड़े वेग से प्रवाहित होने लगी।

समीक्षा – जिन गंगा–यमुना को भगवान् शिव अपने सिर पर धारण करते हैं। जिन्हें हम माता मानते हैं उन्हें साईं अपने पैरों से प्रवाहित हुई दर्शाते हैं। यदि ये सत्य है तथा साईं की कब्र बात करती हैं तो साईं भयंकर सुखाग्रस्त महाराष्ट्र में गंगा–यमुना क्यों प्रवाहित नहीं करता है। इसी पृष्ठ पर अपने को बल पूर्वक पुजवाता है।

सच्चरित्र पृष्ठ–32 – साईं चिलम तैयार करता है। सब प्रबन्ध करके वह चिलम पीता है। तन पर कफनी (मुस्लिम परिधान) है।

समीक्षा– आचार्य चाणक्य नशेड़ी लोगों को धरती पर बोझ बताते हैं तथा उन्हें पशुतुल्य (बुद्धिहीन) बताते हैं जिसका अपने मन तथा इंद्रियों पर नियंत्रण न हो वह दूसरों का क्या भला करेगा।

सच्चरित्र पृष्ठ–35 – साईं ने भक्त को स्वप्न में दर्शन दिए व कहा कि आजकल मेरा शिरड़ी में वास है।

समीक्षा – यदि शरीर का सारा खून किसी एक अंग में स्थापित हो जाए तो अन्य अंग शिथिल होकर व्यक्ति तुरन्त मर जायेगा वैसे ही सर्वव्यापक परमात्मा एकदेशीय नहीं हो सकता है। यदि हो जाए तो सृष्टि का वजूद ही न रहे। जो स्वप्न की बात है तो यदि हम दिन–रात किसी भिखारी या ईसा–मसीह का स्मरण करेंगे तो उन्हीं के स्वप्न हमें आयेंगे। यदि हम दिन–रात भूत–प्रेत का स्मरण करेंगे तो स्वप्न में क्या हमें असल में भी भूत–प्रेत नजर आयेंगे।

सच्चरित्र पृष्ठ–37 – एक व्यक्ति से साईं का झगड़ा हो गया। दोनों में कुश्ती हुई तो साईं हार गया। उसी समय से फटे–पुराने चिथड़े पहनने लगा।

समीक्षा – जो व्यक्ति एक छोटी–सी हार से टूट जाये तथा हीनभावना से मरकर नकली वैरागी हो जाए उससे हम क्या प्रेरणा ले सकते हैं। बिना किसी बात के अपशब्द कहने वाले तथा अहंकारी व्यक्ति इसी प्रकार झगड़ते फिरते हैं।

सच्चरित्र पृष्ठ–38 – साईं के पास एक चिलम, तम्बाकू, एक टमरेल, एक लंबी कफनी, सिर के चारों ओर लपेटने का कपड़ा व एक सटका था। कपड़ों को कई हफ्तों तक साफ न करते तथा नंगे पैर रहते थे। वे सदा 'अल्लाह मालिक' का उच्चारण करते रहते थे।

समीक्षा – क्या साईं को साफ–सफाई के महत्त्व का नहीं पता था इससे पता चलता है कि साईं एक आलसी तथा अज्ञानी व्यक्ति था। हमारे सभी महापुरुष तथा ऋषि–मुनि खड़ाऊ पहने थे। इसके पीछे एक बहुत बड़ा विज्ञान है परन्तु साईं उसको नहीं जानता था।

सच्चरित्र पृष्ठ–45 – रामनवमी के अवसर पर थोड़ा गुलाल साईं को लग गया तो वे एकाएक क्रोधित होकर उच्च स्वर में अपशब्द कहने लगे।

समीक्षा – भगवान (भ=भूमि, ग=गगन, व=वायु, अग्नि तथा न=नीर) श्रीकृष्ण कहते हैं कि क्रोध से अत्यन्त मूढ़ (महामूर्ख) भाव पैदा होता, मूढ़ भाव से स्मृति में भ्रम पड़ जाता है, स्मृति भ्रम से बुद्धि का नाश हो जाता है तथा बुद्धि नष्ट होने से व्यक्ति ही नष्ट हो जाता है। गीता।। 2/63 साईं आजकल के पाखण्डी गुरुओं की तरह ही था। ये सभी जीते–जी अपने को पुजवाते हैं। साईं इन सबका प्रेरणा स्त्रोत है।

सच्चरित्र पृष्ठ–47 – साईं अचानक क्रोधित हो गया। जो भी उन्हें शांत करने जाता उसके ऊपर साईं ईंट फेंकने लगता। लोग समझ नहीं पाए कि किस अज्ञात कारण से साईं इतना क्रोधित हो

गया। उन्होंने तथ्या को क्यों पीटा व उनका क्रोध तुरन्त क्यों शांत हो गया? साईं बिना कारण के क्रोधित हो जाया करते थे।

समीक्षा – गुस्सा घुस्से मरवाता है। इस क्रोध के कारण साईं एक पहलवान से मार खा चुका था। कहते हैं साईं धुनी लगाकर तपता था परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण तथा भर्तृहरि ने एक स्वर में तप के बारे में कहा कि तप की महत्ता अक्रोध (शान्तभाव) में है। कई बार क्रोध करना अनिवार्य होता है परन्तु साईं अकारण क्रोधित होकर पशुतुल्य व्यवहार करता था।

सच्चरित्र पृष्ठ–48 – फकीरों के साथ साईं माँस तथा मछली का भी सेवन करते थे। कुत्ते भी उनके भोजन पात्र में मुँह डालकर स्वतंत्रतापूर्वक खाते थे। 'अल्लाह मालिक' सदैव उनके होठों पर रहता था। वे अचानक क्रोधित हो जाते थे।

समीक्षा – माँस खाने वाले सभी जीव जीभ से पानी पीते हैं तथा उनको पसीना भी नहीं आता है। आचार्य चाणक्य माँस खाने वाले, नशा करने वाले, मूर्ख, निरक्षर तथा विषयों में लीन व्यक्ति को धरती पर बोझ बताते हैं। साईं धरती पर बोझ था क्योंकि ऊपर के सारे अवगुण साईं में मौजूद थे।

हमारे शास्त्रों ने अहिंसा को परम धर्म बताया है जबकि यह साईं हिंसक होकर, निर्दई होकर निर्दोष जीवों को मारकर अपना पेट भरता था। गीता में हिंसक व्यक्ति तथा क्रोधित व्यक्ति को निर्दई कहा है। यूरोप के शोधों को सही मानने वालों को बता दूँ कि ब्रिटेन तथा अमेरिका के शोधकर्ता माँस खाने को सभी रोगों का प्रमुख कारण बताने लगे हैं। माँस खाने वाला कभी सुखी न रहेगा नीच गति को पाकर बहुत जल्दी मरेगा।

सच्चरित्र पृष्ठ–49 –साईं म्हालसापति को बताता है कि मेरा जन्म पाथर्ड़ी में हुआ। मेरे माता–पिता ने बाल्यकाल में ही मुझे एक मुस्लिम फकीर को सौंप दिया था।

समीक्षा – इससे पहले पुस्तक में साईं को स्वयं प्रकट होना

बताया गया है। अतः साईं की एक बात झूठी है। हमारे उत्तर भारत में एक कहावत है कि 'भूखे की बावड़जा पर झूठे की नहीं।' भगवान् राम जैसे महापुरुष के पवित्र नाम को साईं जैसे अपवित्र नाम के पीछे लगाना उनका अपमान है। अतः 'राम नाम है पावन,। साईं नाम है रावण।।

सच्चरित्र पृष्ठ–51 – एक बार लोगों ने साईं को धौती क्रिया करते देखा कि उन्होंने अपनी आंतों को पेट से बाहर निकालकर चारों ओर से साफ किया व समीप की वृक्ष पर सूखने के लिए टाँग दिया।

समीक्षा –

साईं सच्चरित्र से लगा सच का पता।
अब आया से आट में मेरा बटा।।

युक्ति से विचारने पर पता चलता है कि साईं ने हाथ को सफाई से कुछ लोगों को मूर्ख बनाया है क्योंकि धौति क्रिया मलमल के कपडे से शरीर के अंदर होती है। अंधों में काना राजा बनकर प्रतिष्ठा पाने के लिए अपने को योग में दक्ष बताता था। साईं झूठ बोलता था क्योंकि 'योगी व्यक्ति भोगी नहीं होता तथा भोगी व्यक्ति योगी नहीं हो सकता है। यदि वह चमत्कारी था तो आंतों को बिना बाहर निकाले ही साफ कर सकता था। जो व्यक्ति हफ्तों अपने कपड़े न धोता हो वह धौति क्या करेगा।

सच्चरित्र पृष्ठ–52 – केवल अल्लाह ही मेरा डॉक्टर है।

समीक्षा – यदि अल्लाह डॉक्टर होता तो साईं के जले हुए हाथ पर सारी उम्र घृत की मालिस व पट्टी न बांधनी पड़ती। हमारे यहाँ लोग बिमारी ठीक होना या कोई काम बन जाने का श्रेय अपने इष्ट देवता को देते हैं जबकि विपरीत स्थिति में जिम्मेदार डॉक्टर या किसी अन्य को ठहराते हैं।

सच्चरित्र पृष्ठ–61 – एक स्त्री ने कुत्ते को भोजन कराया तो साईं का पेट भर गया। साईं ने कहा कुत्ते, बिल्ली, सुअर मेरे ही स्वरूप हैं।

समीक्षा – यदि पशु–पक्षियों की तृप्ती से साईं की तृप्ती होती है तो सारी उम्र माँस, मछली, पुलाव, मेवे, तम्बाकू, बीड़ी आदि क्यों खाता पीता रहा। फिर उसे आंतों की सफाई करनी पड़ती थी।

सच्चरित्र पृष्ठ–63 – यद्यपि बाबा को अष्ट सिद्धियाँ प्राप्त थी परन्तु उन्होंने कभी उनका उपयोग नहीं किया। 'अल्लाह मालिक' सदैव उनके होठों पर रहता।

समीक्षा – यदि साईं भगवान था तो 'अष्ट–सिद्धियाँ प्राप्त थी' ऐसा क्यों लिखा। प्राप्त हुई चीज या तो किसी से, छिनी जाती है या भीख में मिलती है। खैर, साईं जितना लोगों को बहका सकता था उतना किया। उसके साथ तात्या, म्हासापति, हेमाडपंत जैसे 5–10 विश्वासपात्र लोगों की प्रचारमंडली थी जो साईं को हमेशा महिमामंडित करते रहते थे। आज भी वही फार्मुला काम कर रहा है। इससे ज्यादा वह कुछ कर भी नहीं सकता था वरना भयानक अत्याचारी अंग्रेजों को भगाने का एक प्रयास तक न कर सका। वह तो एक अहसान फरामोश व्यक्ति था क्योंकि जिस देश का अन्न, जल तथा हवा का सारी उम्र उपभोग किया उसी को खोखला करता रहा।

सच्चरित्र पृष्ठ–64 – उन्होंने लगातार 60 वर्षों तक शिरडी की मस्जिद में निवास किया और सन् 1918 में मृत्यु हुई। अतः बाबा का जन्म सन् 1838 के लगभग हुआ था।

समीक्षा – सच्चरित्र के अनुसार साईं जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक गुलाम देश का निवासी रहा। जब भी कोई महापुरुष जन्म लेता है तो वह पाप, अन्याय का नाश करके प्रजा को सुखी बनाता है। श्रीराम ने रावण आदि राक्षसों तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कंस व कौरवों का नाश करके अपने देश मातृभूमि तथा धर्म की रक्षा की थी। साईं के बाद श्रीरामचन्द्र जी का नाम लगाकर साईं को उनका अवतार बताते हैं। साईं के समय देश अंग्रेजों के अधीन था। साईं ने देश स्वतंत्र कराना तो दूर किसी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग तक

न लिया। किसी क्रांतिकारी या देशभक्त सज्जन ने भी अपने उस समय के लेखों, किताबों में साईं का जिक्र तक न किया। उस समय के अखबारों तथा पत्रिकाओं में भी साईं का कोई जिक्र नहीं है। इससे पता चलता है कि साईं के चुगुल में थोड़े से 'आँख के अंधे गांठ के पूरे' लोग फंस गए होंगे। उसके जीते–जी देश व समाज में न तो उसकी ख्याति थी और न प्रतिष्ठा। हमारे शहीद ही सच्चे चमत्कारी पुरुष थे। जब पाखण्डी होंगे नंगे, तब फहरेंगे चारों ओर तिरंगे।

सच्चरित्र पृष्ठ–65 – उनके वचनों के वर्णन का साहस सरस्वती भी नहीं करती। यद्यपि बाबा वाह्य विषय पदार्थों का भोग करते थे।

समीक्षा – साईं के अपवित्र वचनों का वर्णन माँ सरस्वती तो क्या कोई साईं की भक्त भी वर्णन करने में लज्जा महसूस करें।

वाह्य विषय भोगता हुआ, कहे अपने को संत।
नहीं होगा उस पाखण्डी–सा दुनिया में कोई गंद।।

सच्चरित्र पृष्ठ–68 – यदि अल्लाह नहीं आने देता तो मैं क्या करूँ? साईं हाजी को कहता है "मैं मस्जिद में क्या बकरा हलाल करने वाला हूँ, उसे क्या स्वीकार होगा बकरे का माँस, नाध या अंडकोष?"

समीक्षा – ऐसे वचन हम श्रीराम, श्रीकृष्ण तथा ऋषियों की सन्तानों को सुनना शोभा नहीं देता। साईं कहता है कि मेरे वचन सुनने मात्र से ही तुम्हें मोक्ष मिलेगा। ऐसे वचन सुनने से मोक्ष नहीं मनुष्य योनि से भी नीच योनि मिलेगी। साईं भक्त इसे श्रीराम तथा श्रीकृष्ण का अवतार किस आधार पर बताते हैं यह समझ से परे है क्यों हमारे शास्त्रों के अनुसार –

माँस खाने वाला कभी, सुखी न रहेगा।
नीच गति को पाकर, बहुत जल्दी मरेगा।।

सच्चरित्र पृष्ठ–74 – सब चिंताओं को त्यागकर मैं केवल एक स्थान पर ही रहता हूँ फिर भी माया मुझे कष्ट पहुँचाती है।

समीक्षा – मनु महाराज तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी संन्यासी के बारे में कहते हैं कि संन्यासी के एक स्थान पर रहने से जनता का ज्यादा उपकार नहीं होता परन्तु विशेष ास्थिति में ज्यादा समय भी रहा जा सकता है। उस समय अपना देश गुलाम था तो साईं का कर्तव्य 60 वर्ष शिरडी रहने का नहीं बल्कि लोगों को जागरूक करने का था। साईं शिरडी रहकर पैसों को इधर–उधर करता रहा। किसी से लिए व किसी को दिए। साईं भक्त उसे हिन्दू–मुस्लिम एकता का प्रतीक मानते हैं। यदि ऐसा था तो सन् 1905 में धर्म के आधार पर पहली बार बंगाल का विभाजन अंग्रेजों द्वारा कैसे हुआ। साईं ने विभाजन रोकने का प्रयास भी नहीं किया। अंत में लाल, बाल, पाल ने विभाजन के खिलाफ बंग–भंग आन्दोल चलाया जिसके परिणामस्वरूप 1911 में बंगाल विभाजन रद्द करना पड़ा। हिन्दू–मुस्लिम एकता के सही प्रतीक तो हमारे देशभक्त, आंदोलनकारी तथा क्रांतिकारी हैं यह साईं नहीं। यह तो वही बात हो गई कि 'किसी की पगड़ी किसी का सर'।

सच्चरित्र पृष्ठ–80 – यदि कोई साईं को एक पैसा दे देता तो वे उससे तम्बाकू आदि खरीद लेते थे। वे प्रायः बीड़ी व चिलम पिया करते थे।

समीक्षा – सबको पता है कि तम्बाकू से कैंसर होता है। भारत सरकार तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन विज्ञापनों के द्वारा भी लोगों को ऐसे व्यसन से मुक्त कराने का प्रयास कर रहे हैं। अनपढ़, अज्ञानी साईं इसे नहीं जानता था। इतना सब जानते हुए भी साईं पर अंधा विश्वास करते हैं लोग।

लोगों ने बना दिया साईं को महाराज।
ऐसे व्यसनी को पूज आई न तुमको लाज।।

प्रचार तब तक होगा जब तक लोग सत्य जानकर उसे अपना न लें।

मुक्ति संगठन खोलेगा साईं की पोल।
करता हूँ आज मैं सबके सामने खोल।।

पुस्तक पढ़कर कुछ लोग विचार कर सकते हैं कि यदि साईं ऐसा गुणहीन व्यक्ति था तो उसके पीछे इतनी जनता पागल कैसे हो गई। सच तो ये है कि साईं के जीते जी उसकी बहुत कम ख्याति थी वह भी भ्रमित करके लोग जोड़े जाते थे। आज हजारों नकली गुरु तथा भगवान् बने बैठे लोग भी साईं की तरह थोड़े बहुत लोगों को घेरकर रखते हैं। कोई कम तो कोई ज्यादा।

पाखंडियों ने लूट लिया, देश का सारा माल।
अब इन बेईमानों का, कर देंगे बुरा हाल।।

लेकिन विद्वान लोग जानते हैं कि किए हुए कर्मों का फल जरूर मिलेगा।

नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।
शनैरावर्त्तमानस्तु कर्त्तुर्मलानि कृन्तति।। मनु.।।

अर्थात् किया हुआ अधर्म निष्फल कभी नहीं जाता परन्तु जिस समय अधर्म करता है उसी समय फल भी नहीं होता। इसलिए अज्ञानी लोग अधर्म से नहीं डरते। तथापि निश्चय जानो कि वह अधर्माचरण धीरे–धीरे तुम्हारे सुख के मूलों को काटता चला जाता है।

उपनिषद् भी कहते हैं कि जो अविद्या के भीतर खेल रहे पाखण्डी, अपने को धीर तथा पण्डित मानते हैं वे नीचगति को जाने वाले मूर्ख जैसे अंधे के पीछे अन्धे दुर्दशा को प्राप्त होते हैं वैसे दुःखों को पाते हैं।

अतः हमें वेद, गीता आदि आर्ष ग्रन्थों में बताए धर्माचरण को अपनाना चाहिए।

वेदाचारी ऋषियों से है इस देश की शान।
सदा से विश्वगुरु मेरा आर्यावर्त महान।।

पुस्तक पढ़ने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि साईं ने सारी उम्र वेद, गीता, मनुस्मृति तथा उपनिषदों के विरूद्ध आचरण किया। फिर भी लोगों ने साईं को श्रीराम तथा श्रीकृष्ण का अवतार बता दिया।

गीता के विरूद्ध आचरण है ऐसा शैतान।

लोग पूजने लग गए, मानकर भगवान।।

यह हमारे महापुरुषों का सरासर अपमान है क्योंकि यह साईं मांसभक्षी, नशेड़ी, क्रूर, हिंसक तथा गुस्सेल व्यक्ति था। साईं के बारे में एक ही बात कही जा सकती है कि–

श्रेष्ठों की प्रेरणा से जब पढ़े आर्ष ग्रन्थ।
पता लगा साईं को मिली नीच गति अनन्त।।

हमारा देश सदा से महान रहा है किन्तु थोड़े दिनों की गुलामी ने अज्ञानरूपी अंधकार को बहुत गहरा कर दिया है। अब ज्ञानरूपी प्रकाश ही सब पाखंडियों की पोल खोलेगा क्योंकि

ज्ञान की ज्योति जब जलेगी।
साईं की धोती तब खुलेगी।।

अब ज्ञान की तलाश में इधर–उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि 'वेद नाम है ज्ञान का, साईं नाम अभिमान का'। भारत में वेदों की शिक्षा खत्म होते ही समाज अज्ञानी होकर इन पाखंडियों के जाल में मैं फंस गया। वेदों ने कहा है कि–

सत्य का प्रचार है महान कर्म।
सभी श्रेष्ठजनों का है प्रथम धर्म।।

अपने सभी श्रेष्ठजन सत्य का प्रचार करें। यदि आप अपने जीवन में एक व्यक्ति को भी सत्य मार्ग पर ला सके तो आपका जीवन सफल होगा। जो कोई उत्तमगुणयुक्त सत्य का पुजारी होगा वह पुस्तक पढ़कर तथा विचारक साईंमत में पलभर नहीं रहेगा तथा दूसरों को भी सत्य से अवगत कराकर अपना पूण्य कर्म बढ़ावे।

सच्चरित्र के 220 पृष्ठों पर साईं की मूर्खता का बखान किया गया है। अतः सत्य के जिज्ञासु इतने से ही सत्य–असत्य में अंतर समझ जायेंगे। पुस्तक की पृष्ठ संख्या तथा मूल्य ज्यादा बढ़ाने का कोई लाभ न था। यदि पुस्तक को बुद्धिमान लोगों ने पसंद किया तो सभी समस्याओं को नजरअंदाज करके बाकी पृष्ठों पर भी पुस्तक जल्द प्रकाशित कर दी जायेगी।

कई बार लोग अपने मतों के खिलाफ सुनना पसंद नहीं करते तथा उनके नकली भगवानों की दी शिक्षा से हिंसा पर भी उतर आते हैं। अतः सज्जन व्यक्ति उन्हें प्यार से समझावें और जो न समझे तो उसके लिए सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करें। यदि पाखंडियों के भ्रमजाल से लोगों ने नाता तोड़ लिया तो मेरा यह परिश्रम सफल हो जावेगा क्योंकि –

ढोंगियों के चंगुल से जब जनता निकल जायेगी।
थोड़े से दिनों में इनकी माँ सी मर जायेगी।।

वेद भगवान की भी आज्ञा है कि –

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तों विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः।। ऋ. 1/63/4

अर्थात् निरन्तर कर्म करते हुए प्रभु महिमा का प्रचार करो, ऐश्वर्यों को सत्याचरण तथा धर्म से बढ़ाओ, विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ, राक्षसों का संहार करो अर्थात् दुष्ट तथा पाखंडियों का संहार करो।

अमेरिकी एजेंट या (परदे के पीछे का सच) आज देश के हालात को देखते हुए कोई देशभकत अपनी रचनाओं में भ्रष्टाचार तथा छिपे हुए राजनीतिक सच को जनता के सामने न लाए ऐसा हो ही नहीं सकता है। मैं यहाँ परदे के पीछे का एक ऐसा ही छुपा हुआ सच चाहूँगा।

सन् 1998 ई. में भारत ने परमाणु विस्फोट किया तो अमेरिका ने हमारे ऊपर अनेकों पाबंदियाँ लगाई तथा हमें थोरियम देना बन्द कर दिया। अब अचानक अमेरिका हमें थोरियम देने को राजी क्यों हो गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश भारत आए तो एक सिविल न्यूक्लीयर डील हुई जिसके अनुसार अमेरिका भारत को यूरोनियम–235 देने को तैयार हो गया। उस वक्त पूरी मीडिया ने डॉ. मनमोहन सिंह की तारीफों के पुल बांधे थे। एटोमिक एनर्जी कमीशन के 6000 वैज्ञानिक पिछले 30–40 वर्षों से इस काम में लगे हैं कि थोरियम के अतिरिक्त हमारे पास कौन से रेडियो एक्टिव ईंधन हैं जिनसे

बिजली तथा बोम्ब बनाए जा सकते हैं उनको पता चला है कि भारत के तमिलनाडू तथा केरल का जो समुद्री एरिया है वहाँ पर बड़ी मात्रा में रेडिया एक्टिव ईंधन है। डॉ. कलाम का कहना है कि उस ईंधन से 3 लाख मेगावाट बिजली हर घंटे 240 साल तक बना सकते हैं। यह आंकड़ा काफी बढ़ सकता है। अमेरिका की उस पर निगाह है। इस खेल को पूरा करने के लिए अमेरिका रामसेतु को तोड़ना चाहता है। इस काम के लिए अमेरिकी एजेंट मनमोहन जी–तोड़ मेहनत कर रहा है। सरकार ने अदालत में हलफनामा दाखिल कर कहा है कि राम भगवान नहीं हुए हैं। यह एक मिथक है। जब राम ही नहीं हुए तो रामसेतु का प्रश्न ही नहीं उठता। यह सन् 2008 की बात है। हिन्दुओं के देशव्यापी विरोध के बाद सरकार ने अपनी गलती मानकर वैकल्पिक मार्ग खोजने का भरोसा दिया था। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट में दायर हलफनामें में सरकार ने फिर से पुराना राग अलापना शुरू कर दिया है। पचौरी समिति ने भी कहा है कि रामसेतु तोड़ना उचित नहीं है परन्तु सरकार ने उनकी सिफारिश मानने से इन्कार कर दिया। पचौरी समिति सरकार की इस परियोजना को तकनीकी तथा पर्यावरण की दृष्टि से हानिकारक बता रही है। पचौरी समिति कहती है कि यह परियोजना गले की फांस बनेगी तथा जहाजों के फंसने का कारण बनेगी। इससे तेल तथा गैसों का रिसाव हमेशा होता रहेगा। इससे समुद्री जीवों के अस्तित्व को भी खतरा पैदा हो सकता है।

हजारों साल से लोगों की आस्था के केन्द्र बिन्दु रहे विषयों को क्या प्रमाण की आवश्यकता है? कश्मीर के हजरतबल दरगाह में रखे पैगम्बर साहब के बाल की प्रमाणिकता पूछने का साहस क्या कोई करेगा? ईसा–मसीह को सलीब पर लटकाया गया था क्या कोई उस पर प्रश्न खड़े करेगा? प्रभु ईसा एक कुंआरी कन्या मदर मैरी के गर्भ से पैदा हुए। क्या इस मान्यता की कोई वैज्ञानिक व्याख्या हो सकती है? केन्द्र सरकार क्या इस बात का जवाब देगा कि

रामायण में वर्णित उसी स्थान विशेष पर ही सेतु क्यों है? वह लंका को ही क्यों जोड़ता है? क्या अयोध्या में विवादित ढांचे के नीचे महल या मंदिर होने के वैज्ञानिक साक्ष्य नहीं मिले हैं? क्या लुप्त द्वारकापुरी के समुद्र में मग्न होने के प्रमाण नहीं मिले हैं? क्या रेगिस्तान में विलुप्त सरस्वती नदी के प्रवाह मार्गों की वैज्ञानिक पुष्टि नहीं हो रही? सरकार रामसेतु को मानवनिर्मित नहीं मानती है। भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण विभाग के पूर्व निदेशक बद्रीनारायण का मानना है कि रामसेतु प्राकृतिक संरचना न होकर मानवनिर्मित है। बद्रीनारायण के अनुसार वे पत्थर समुद्रनिर्मित नहीं है तथा उन्हें यहाँ किसी प्रयोजन से डाला गया है। लकडियों, चूने, लोहे की कीलों तथा बड़ी मात्रा में पत्थर से पुल बाँधा गया प्रतीत होता है। कोई भी व्यक्ति इण्टरनेट पर रामसेतु को सेटेलाईट से खीची तस्वीर देख सकता है। वाल्मीकि रामायण में लिखा है "पर्वतांश्च समुद्रत्पादय यंत्रैः परिवहति च, अर्थात् बड़े पर्वतों पत्थरों को यंत्रों के द्वारा समुद्र तट पर लाया गया है। वाल्मीकि रामायण में खास बात यह है कि उसमें भगवान् राम को परमात्मा न कहकर महान् तथा सर्वगुणसम्पन्न महाराज कहा है। हजारों साल पहले की वाल्मीकि रामायण से तुलसीदास रचित रामायण बिल्कुल भिन्न है। यदि आज भगवान् राम तथा श्रीकृष्ण जी होते तो उनके नाम पर भीख मांगने वालों तथा उनको मंदिरों में कैद करने वालों को उचित दंड देते। खैर, रामसेतु जहाँ पर्यावरण और हमारे दक्षिणी तटों की सुरक्षा के लिए आवश्यक है वहीं वह भारत की ऐतिहासिक आध्यात्मिक पहचान तथा उन्नत विज्ञान का भी प्रतीक है। वैज्ञानिकों ने भी इस बात की पुष्टि की है कि सन् 2004 में आए सुनामी से तुतीकोरिन और दक्षिणी केरल के तटों की रक्षा इसी सेतु के कारण हो पाई थी। रामेश्वर और धनुष कोडि क्षेत्र में थोरियम विश्व का सबसे बड़ा भण्डार है। क्या भारत सरकार किसी अंतराष्ट्रीय दबाव में इस भंडार को तथा सेतु को नष्ट करना चाहती है? हैरत की बात है कि

जब समुद्र मार्ग बनाने के अन्य सस्ते विकल्प उपलब्ध हैं तो देश को इतनी कीमतें चूकाने की क्या आवश्यकता है? वर्ष 2010 में कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए नई दिल्ली के सुन्दर नगर तथा लोधी रोड इलाके से होते हुए खेलगाँव तक सुरंग बनाने की योजना केवल इसलिए खटाई में पड़ गई क्योंकि इससे हुमायुँ के मकबरे को क्षति पहुँचने की आशंका थी। हकीकत यह है कि मकबरा योजना मार्ग से दूर था और पुरातत्व विभाग ने योजना को हरी–झंडी दे दी थी परन्तु दिल्ली सरकार ने वोट बैंक की राजनीति के कारण इस महत्त्वपूर्ण योजना को हमेशा के लिए ठंडे बसते में डाल दिया। यहाँ राष्ट्रीय धरोहर तथा करोड़ों लोगों की आस्था के प्रतीक रामसेतु को तोड़ना क्या उचित है?

पिछले 4–5 सालों में अनेक अखबारों में ऐसे लेख छप चुके हैं तथा टेलीविजन पर चर्चाएं भी बहुत हुई हैं। लेकिन हम बच्चों की तरह एक कान से सुनकर दूसरे से निकालते रहे। अब सभी देशवासियों को मिलकर सोचना होगा कि राजनीति में उसी को वोट दें जो राष्ट्रीय धरोहरों, राष्ट्रीय सम्पत्ति की सही मायनों में रक्षा कर सकें।

प्रश्न पूछती फिरती सबसे राष्ट्र ध्वजा इस देश की –
'तुमको ममता मेरी ज्यादा है, या अपनी देह की?
क्या उत्तर दोगे तुम, अपनी आने वाली पीढ़ी को।
अपने जीने की खातिर, यदि मेरी इज्जत बेच दी?

हृदय रोग

कुछ लोग सोचेंगे की स्वास्थ्य सम्बन्धी बातों का इस पुस्तक में क्या काम है। मैं उनको बता दूँ कि पुस्तक का मुख्य उद्देश्य लोगों के दिलों में सत्य का प्रकाश करना है जिसके लिए सबके दिल स्वस्थ होने अत्यन्त आवश्यक है। आज हमारे देश में 30 प्रतिशत लोग हृदयरोग से पीड़ित है। हृदयरोग को बहुत आराम से ठीक किया जा सकता है परन्तु इसके इलाज के नाम पर लूट तंत्र खुले

हुए हैं। बड़े–बड़े अस्पताल हैं एंजियोप्लास्टिक की जाती है। जिससे कुछ दिन व्यक्ति ठीक रहता है फिर वही हाल हो जाता है। हृदयरोग का ऑप्रेशन करके ब्लाकेज वाली नली में एक स्प्रिंग डाल देते हैं। बस, 3 से 5 लाख रुपये में यही इलाज करते हैं। ये हमेशा के लिए रोग से छुटकारा नहीं दिलाता बल्कि कई बार सुबह ऑप्रेशन किया और शाम को फिर अटैक पड़ जाता है। आजकल हृदयरोग में दी जाने वाली दवा सबसे खतरनाक है। अमेरिका की बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ वे दवाईयाँ बेच रही हैं जो अमेरिका आदि देशों में 20 सालों से बैन की हुई है। हृदयाघात होने पर जो स्प्रिंग फिट किया जाता है उसे स्टेन्ट कहते हैं। यह अमेरिका से आता है और इसकी कीमत केवल 150 रुपये ही हैं। यह 2–3 लाख में बेचते हैं। एकबार हृदयाघात में एक स्टेंट डालेंगे दूसरी बार दूसरा डालेंगे। दवा उद्योग में अमेरिका की बहुत तगड़ी पकड़ है। ये अमेरिकी कम्पनी दवाओं को पेटेंट कराकर 20–30 सालों तक मनमाने दाम में बेचती हैं क्योंकि अन्य कम्पनियां इन्हीं दवाओं को बेच ही नहीं सकती है। इन सबको देखते हुए भारत अमेरिका का उपनिवेश प्रतीत होता है क्योंकि स्वतंत्रता से पहले हमारी गाढ़ी कमाई इंग्लैण्ड जाती थी परन्तु अब अमेरिका जा रही है। जो व्यक्ति एक बार किसी बड़ी बिमारी की ऐलोपैथिक दवाई खाने लग गया समझो वह उनका सारी उम्र क़ा ग्राहक बन गया। क्योंकि वे दवा नहीं जहर बेचते हैं जो थोड़ी देर आराम देकर सारी उम्र का आराम हराम कर देती है। अब हृदय रोग का टिकाऊ तथा सस्ता इलाज आयुर्वेद में ही है।

जब हृदय में घात हो रहा है तो ब्लाकेज शुरू हो रहा है व खून में अम्लता बढ़ रही है। यह अम्लता पहले पेट में बढ़ती है तो जलन, खट्टी डकारें, बढ़ती हैं। जब यह बहुत ज्यादा बढ़ जाए तो यही पेट की अम्लता खून में आती है जिसे रक्त अम्लता कहते हैं। इससे खून बहुत ज्यादा गाढ़ा होकर हृदय से निकल नहीं पाता तथा ब्लाकेज आनी शुरू हो जाती है। उसके बाद हृदयाघात होता है।

अतः रक्त की अम्लता खत्म कर दी जाए तो रोग जड़ से खत्म हो जायेगा। विज्ञान के विद्यार्थियों ने एक प्रक्रिया पढ़ी होगी उदासीनीकरण, तो जितना अम्ल है उतनी ही मात्रा में यदि क्षार पहुँच जाएं तो वहाँ अम्ल उदासीन हो जायेगा। अतः रक्त में अम्लता बढ़ जाने पर क्षारीय चीजें खाओ। अम्ल (एसीडिक) व क्षार (एलक्लाईन) को मिलाने पर न्यूट्रल होता है। अतः क्षारीय चीजें खाओ हृदय रोग कभी नहीं होगा और यदि हो गया है तो ठीक हो जायेगा। दुनिया में सबसे ज्यादा क्षारीय चीज है लौकी (घिया)। हर रोज सुबह खालीपेट लौकी का जूस पीएं। इसको और ज्यादा क्षारीय बनाने के लिए इसमें 7–10 पत्ते तुलसी, पुदिना तथा काला या सेंधा नमक डाल लें। केवल 2 महीने में तथा कई बार तो 20 दिन में ही भयंकर हृदय रोग तथा ब्लाकेज बिल्कुल खत्म हो जाती है।

रामदेव जी महाराज कहते हैं कि लौकी का जूस पीओ कभी हृदयरोग नहीं होगा। करीब 3 लाख से ज्यादा लोगों को उन्होंने लौकी का जूस पिलाकर ठीक कर दिया। हजारों डॉक्टर भी 2–3 महीने हरिद्वार लौकी का जूस पीकर तथा योग–प्राणायाम करके स्वस्थ होकर फिर क्लीनिक पर आकर बैठ जाते हैं। वे इतने हरामखोर हैं यह नहीं कहते कि हम रामदेव जी के यहाँ गए थे व लौकी का जूस पीकर आए हैं। वे कहते हैं कि हम न्यूयार्क, जर्मनी, अमेरिका गए थे ऑपरेशन करवाने। हमारे ऋषियों ने हमें ज्ञान का भंडार दे रखा है ज्ञान का समुद्र भरा पड़ा है परन्तु हम अज्ञानरूपी कुलड़ी में गोता लगाने की सोच रहे हैं जो असंभव है। भृतहरि नीतिश्लोक के अनुसार सेवाधर्म सबसे कठिन है। योगीजन भी नहीं समझ पाते। इसमें चारों तरफ से भला–बुरा सुनना पड़ता है।

अतः स्वामी रामदेव जी तथा श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी भी सेवाधर्म का ही पालन कर रहे हैं। इसलिए सभी लोग इनकी प्रशंसा करें यह तो संभव नहीं है परन्तु देश के आधी आबादी इनको प्यार करती है। इसका कारण क्या है? अल्पाहार लेने, जमीन पर सोने,

सुबह 3 बजे से रात 10 बजे तक देशसेवा करने, योग–प्राणायाम को जनसाधारण तक पहुँचाने वाले स्वामी रामदेव जी सारे ऐश्वर्यों को भोगते हुए, दुनिया के सारे अवाडर्ड्स लेकर अपने को पूजवा सकते थे। परन्तु उन्होंने आचार्य चाणक्य की तरह देश की राजनीति के कीचड़ को साफ करने की ठानी है तो कीचड़ के कुछ छीटे उनके ऊपर लगने तो स्वाभाविक ही है। सारी दुनिया की बड़ी–बड़ी हस्ती भारत के सारे नेता, अभिनेता, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तक उनसे मिलने पहुँचते थे लेकिन देश की आवाज उठाने लगे तो नेताओं को तो छोड़ो असत्य के दुष्प्रचार में बहकर कुछ भोले लोग भी स्वामी जी को बुरा–भला कह देते हैं। खैर, समाज में ऐसे लोग हमेशा होते हैं। जब श्रीराम, श्रीकृष्ण, आचार्य चाणक्य, महर्षि दयानन्द ऐसे लोगों की आलोचनाओं से न बचे तो स्वाभाविक है कि स्वामी रामदेव व आचार्य बालकृष्ण भी नहीं बच सकते हैं।

अंत में इतना ही कहना चाहूँगा कि सत्य–असत्य को विचार कर सत्य को उसी प्रकार अपना लेना चाहिए जैसे हंस दूध और पानी को अलग करके दूध को अपना लेता है। यदि पुस्तक पढ़कर किसी की भावनाएँ आहत हुई हो तो क्षमाप्रार्थी हूँ परन्तु महर्षि दयानन्द जी ने हर स्थिति में सत्य का प्रचार करने की शिक्षा दी थी। ज्ञान के अभाव में गलतियाँ हो सकती हैं। परन्तु सज्जन पुरुष उनको नजरअंदाज करेंगे ऐसी आशा करके मैं पुस्तक के आधार स्तंभ सत्य पर दो पंक्तियाँ कहकर आप सभी श्रेष्ठजनों को नमस्कार करता हूँ।

कड़वी औषध से ही, मिलते हैं प्राणदान।
शुरू में सच कड़वा होता, अंत मिले सम्मान।।

।।ओ३म्।।

आर्यसमाज के नियमों के उद्देश्य

१ . सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२ . ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३ . वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४ . सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५ . सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

६ . संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७ . सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८ . अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९ . प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

देशभक्त : सरदार भगत सिंह

जिन्हें हम हार समझते थे गला अपना सजाने को।
वही अब नाग बन बैठे हमें ही काट खाने को।।